CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि० ७६४
१५०१
7-2

तारण शब्दकोष

लेखकः—
क्षुल्लक जयसेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या................ प्राप्ति-संख्या....................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम .... नाण-शब्द-कोष ....

लेखक .... सुल्लुक जयसेन ....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* तारण-शब्द-कोष *

९५०१

—(दो-खण्ड)—

लेखक—

श्री क्षुल्लक जयसेन महाराज

हि०७५४

प्रकाशक—

श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल हजारीलाल जी,
हैदरगढ़ बासोदा (ग्वालियर)

प्रथमावृत्ति	वीर सम्वत २४६६	मूल्य—
१०००	तारण सं० ४२४	अध्ययन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२०१

सावधान !

यह ग्रन्थ आपका परम पवित्र धार्मिक शास्त्र है, अतएव विनय भाव-पूर्वक सम्हाल कर रखिये। इस इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में प्रकाशित तारण साहित्य का भले प्रकार संग्रह करना प्रत्येक सद्‌गृहस्थका परम कर्तव्य है।

विनीत—

शंकरलाल जैन।

हि° ६४८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्यवाद

यह 'तारण-शब्द-कोष श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल जी हजारीलाल जी हैदरगढ़ बासोदा (ग्वालियर) वालों की ओर से प्रकाशित होकर वितरण हो रहा है, अतएव उक्त दानी श्रीमान् सेठ सा० का परिचय आगे दिया जाता है।

इस ग्रन्थ के द्वारा समाज को कुछ लाभ अवश्य होगा। इस भावना से श्री क्षुल्लक जी महाराज ने इसे लिखा है। यदि कोई त्रुटियां रह गई हों तो विद्वान सज्जन सुधार लें।

—ब्र० गुलाबचन्द।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

यह शब्द कोष–मुमुक्षुवृन्द, विद्यार्थी मण्डल, तथा पांडेजी–वर्ग की बडे काम की चीज है। मेरो रायसे तो प्रत्येक पाठशालाओं के कोर्ष में रखकर इसे प्रत्येक बालक को पढ़ा देना बड़ा ही लाभकारी है।

इस कोष ग्रन्थ में श्रीमतपरमपूज्य गुरुवर्य तारण स्वामी जी कृत आठ ग्रन्थों के शब्दों का अर्थ सहित संग्रह (चुनाव) है।

इसके, दो खंड तो यह एक साथ छप रहे हैं। शीघ्र तीसरा खंड तैयार होकर अलग छपेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारण–शब्द–कोष के प्रकाशक श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल जी साहेब का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमान् सेठ जमनादास जीके सुपुत्र सेठ लखमीचंद जी, इनके सुपुत्र सेठ कुन्दनलाल जी हजारीलाल जी ये दोनों भ्राता बड़े ही सरल स्वभावी शान्त एवं धर्मप्रेमी और दानी हैं आपकी ओर से दो मेले तो श्री क्षेत्र सेमरखेड़ी जी पर लग चुके हैं तथा तीसरा यह विशाल मेला श्री निसई जी (मल्हारगढ़) पर लग रहा है। गत वर्ष श्री क्षुल्लक महाराज के दीक्षोत्सव के समय भी आपने क्षेत्र सेमरखेड़ी जीको १०००) एक हजार रुपया तथा तारण तरण पाठशाला वासोदा को ५००) रुपया दान स्वरूप प्रदान किया था। इस प्रकार आपने अपने जीवन में तीन मेले श्री तारण तीर्थ क्षेत्रों पर लग चुके हैं। व अभीतक का अपना जीवन दान धर्मादिक शुभ कार्यों में ही लगा है, आगे भी आप इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकार धर्म-एवं-समाज के उन्नति-कारक कार्यों में सहयोग देते रहेंगे ऐसी आशा है आपके काका साहिब श्रीमान् सेठ जवाहरलाल जी भी हैदरगढ़ वासौदा में ही रहते हैं तथा आप भी धर्मप्रेमी हैं।

उपर्युक्त कुटुम्ब तारण समाज छहसंघ के असहठी संघ में से है। आपके पहले मेला सं० ८३ के दरम्यान ही क्षेत्र सेमरखेड़ी जी पर षट् संघ तारण समाज का सम्मेलन हुआ था तब से अब तक समाज को परस्पर-खान-पान व विवाहादि संबंध अच्छी तरह हो रहा है। और अब तो छह संघ का नाम सिर्फ कहने के लिये हैं किन्तु सब का अब सामूहिक संगठन होकर 'तारण-समाज' रूप से ही नाम 'व्यवहृत' होता है।

हम उक्त सेठ सा० की पुण्य-वृद्धि की प्रार्थना जिनेन्द्रदेव से करते हैं।

शुभं-भूयात्

विनीत—शंकरलाल जैन कुंडा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षमा-प्रार्थना

हम से जहां तक बुद्धि अनुसार हो सका है साहित्यानुकूल ही शब्दों का अर्थ लिखने की कोशिश की है। फिर भी संभव है, अल्पज्ञतावश त्रुटियां रह गई होंगी, अनुभवी सज्जनों से क्षमा प्रार्थना-पूर्वक उन त्रुटियों के सुधारने का साग्रह निवेदन है। तथा सूचना मिलने पर द्वितीयावृत्ति में संभाल हो जावेगी। तारण समाज की प्रत्येक संस्था में यह कोष बालकों को नियमित रूप से पढ़ाया जावे तो उत्तम है।

—जयसेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री परमगुरवे नमः ॥

तारण-शब्द-कोष

(प्रथम खण्ड)

मंगलाचरण

शुद्धातमा जिनका सुरत्नत्रय निधीका कोष था।
रमण करते थे सदा निजमें जिन्हें सन्तोष था॥
तारणतरण गुरुवर्य के चरणारविन्दों में सदा।
हो नमन बारंबार निज गुण दीजिये शिवशर्मदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम आशीर्वाद "उव उवन्न उवस्य रमणं" में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ

१–	उव	ओंकार या शुद्धात्मा।
२–	उवन	उदय।
३–	उवन्न	उत्पन्न करना।
४–	उवस्य रमणं	उसी में रमण करना।
५–	दिप्तं	दैदीप्यमान, उज्ज्वल अथवा निर्मल प्रकाशमय।
६–	दृष्टिमयं	दृष्टि सहित या (ज्ञाता) दृष्टा
७–	हियियारं	हितकारी।
८–	अर्क	प्रकाश या सूर्य।
९–	विन्द	निर्विकल्प।
१०–	प्रायोजितं	प्रयोजन भूत।
११–	सहयारं	सहकारी या उपकारी।
१२–	सह	सहित या साथ।
१३–	नंत	अनन्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४–	ममलं	निर्मल या शुद्ध ।
१५–	उववन्नं	उत्पन्न करो ।
१६–	ध्रुवं	ध्रुव, निश्चल, अविनाशी
१७–	सुयदेवं	श्रुतदेवता या जिनवाणी
१८–	मुक्ते	मुक्ति या मोक्ष ।
१९–	जयं	वृद्धि हो, जयवन्त हो ।

—(२)—

दूसरा आशीर्वाद (जुगयं खंड सुधार०) में आये हुये शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थः—

२०–	जुगयं	जुग, जोड़ा या दो वस्तुएं मिली हुई (आत्मा और पुद्गल का जोड़ा या जोग)
२१–	खण्ड	जुदा करना ।
२२–	सुधार	हित या कल्याण ।
२३–	रयण	रत्न या रत्नत्रयमय ।
२४–	अनुवं	अनुपम, (उपमारहित)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५–	निमिखं	निमिष या क्षणमात्र।
२६–	घटयं	घड़ी।
२७–	तुञ्ज	तू, तुम, या आप।
२८–	मुहूर्त	४८ मिनिटका १ मुहूर्त
२९–	पहरं	प्रहर (३ घंटेका १ प्रहर)
३०–	चत्रु	चार।
३१–	दिम्नरयणी	दिम्न (दिन) रयणी (रात्रि)
३२–	सुभावं	स्वभाव।
३३–	जिनं	जीतना।
३४–	खिपति	क्षय होना।
३५–	कलिनो	सहित या शोभायमान।
३६–	दिप्ते	दैदीप्यमान।

—(३)—

तृतीय आशीर्वाद (वे दो छंद विरक्त०) में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ—

३७–	वे, दो	वह दो राग, द्वेष।
३८–	छंद या छंड	त्याग करो। छंद (कपट)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६--	दिढ़ियो	दृढ़ होना।
४०--	कायोत्सर्गामिनो	देह से ममत्व छोड़ना।
४१--	केवलिनो	केवली भगवान का।
४२--	लोयालोय	लोकालोक।
४३--	पेप पिपणं	अच्छी तरह देखना या परीक्षा कर लेना।
४४--	नृत	सार।
४५--	दलं	समूह।
४६--	च	और।
४७--	प्रकाशिनो	प्रकाश करने वाले।
४८--	सुयदेवं	श्रुतदेवता या जिनवाणी।
४६--	जुग आदि	चतुर्थ काल का प्रारम्भ।
५०--	श्री संघं जयं	श्री संघ जयवन्त हो।
५१	संघ	समूह या चार संघ।

—(४)—

'उत्पन्न रंज प्रवेश गमन' इस आशीर्वाद में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ—

५२	उत्पन्न	जिनवाणी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५३	रंज	रंगजाना, रंजायमान, या हर्षित प्रफुल्लित होना
५४	प्रवेश	हृदय में धारण करना।
५५	गमन	उसी के अनुसार चलना।
५६	छद्मस्थ स्वभाव	अल्प ज्ञानी।
५७	दुःखेन विलयंगता	दुःखों से छूटना।

— ५)—

श्री पण्डित पूजा ग्रन्थ में आये हुए शब्दों का प्रकरणानुसार अर्थ :—

५८	ओंकारस्य	शुद्धात्मा, या सिद्ध।
५९	ऊर्धस्य	सर्वोत्कृष्ट, या उच्च।
६०	ऊर्ध	सर्वोत्कृष्ट, या उच्च।
६१	सद्भाव	जिसका कभी नाश नहीं होगा
६२	शाश्वतं	अविनाशी।
६३	विन्दस्थानेन	निर्विकल्प, मोक्ष-स्थान।
६४	तिष्ठन्ति	रहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५	निश्चय	यथार्थ, सत्यार्थ, निश्चयनय
६६	नय	अपेक्षा।
६७	जानन्ते	जानते हैं।
६८	विधीयते	विधान या प्राप्ति।
६९	योगी	जो मन, वचन, काय को वशमें रखता हुआ आत्माका ध्यान करे सो योगी।
७०	पण्डितो	हेयोपादेय-विवेक बुद्धि जिस के पास हो सो पण्डित।
७१	पूजा	जिसके भावों में पवित्रता आवे सो पूजा।
७२	उवंकारं	ओंकार।
७३	अचक्षुदर्शन	अतीन्द्रिय (स्वसंवेदनगम्य)
७४	अंकुरणं	अंकूर।
७५	वीर्यं	शक्ति।
७६	लोकितं	देखना।
७७	त्रित अर्थं	तीन अर्थ— सम्यग्दर्शन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र।
७८	चेतना	चैतन्य शक्ति या ज्ञान-दर्शन स्वभाव युक्त।
७९	त्रिभुवनं	तीन भुवन या तीन लोक।
८०	निकंदनं	दूर करना।
८१	प्रक्षालितं	धोना, साफ शुद्ध करना, या प्रक्षालन।
८२	असुह	अशुभ।
८३	त्रिविधि कर्म	द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म।
८४	तिक्तयं	त्याग करना।
८५	समयं	आत्मा।
८६	अन्यानंतन	अनायतन (गाथा १९वीं)
८७	अदेवं	जिसमें सुदेव और कुदेव-पने का अभाव हो।
८८	अगुरू	जिसमें सुगुरू और कुगुरूपने का अभाव हो।
८९	अधर्म	जिसमें सुधर्म और कुधर्म-पने का अभाव हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—(६)—

"श्री माला रोहण" में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

९०	वेदान्त	ज्ञान की अन्तिम सीमा।
९१	सार्धं	श्रद्धान।
९२	धरेत्वं	धारण करना चाहिये।
९३	लंकृत	शोभायमान।
९४	रुलितं	रुलन या नित्य मनन।
९५	बहुभेयं	बहुत भेद।
९६	त्यक्तं	त्याग करके।
९७	दृष्टं	देखा।
९८	हृदिं	हृदय।
९९	अन्या	आज्ञा।

—(७)—

"श्री कमल बत्तीसी ग्रन्थ" में आये हुए शब्दों का अर्थ:—

१००	संद्दहनं	श्रद्धा करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०१	अरजक भाव	जिन भावोंसे बिना फल दिये झड़ जाने वाले कर्मोंका बंध हो, या ईर्यापथ आस्रव रूपी भाव, जैसे सूखे घड़े पर पड़ी हुई रज (धूल) उड़ जावे।
१०२	अन्मोर्यं	आनन्दमय या अनुमोदन।
१०३	जिनयति	विभाव भावों को जीतना।
१०४	प्रजाव	पर्याय या शरीर।
१०५	गलयति	गल जाना।
१०६	विलयं	विलायमान हो जाना।
१०७	खिपनं	क्षय करना।
१०८	चेयनि	चैतन्य।
१०९	जनरंजन	अपने से भिन्न जीवों को रंजायमान (प्रसन्न) करने का प्रयत्न सो जनरंजन।
११०	कलरंजन	अपने शरीर को शृङ्गार युक्त करके अपने आप प्रसन्न होना सो कलरंजन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११	मनरंजन	सांसारिक विभूतियों में राग, द्वेष, मद (गौरव) आदि कर के अपने मन को रंजायमान करना सो मनरंजन।
११२	परमेष्ठी	जो उत्कृष्ट पद में स्थित हों।
११३	पंचाचार	१ दर्शनाचार, २ ज्ञानाचार ३ चारित्राचार, ४ तपाचार, ५ वीर्याचार ये पांच आचार्य परमेष्ठी के गुण हैं।
११४	पयड़ि	प्रकृति।
११५	कलिष्ट	दुःखी प्राणी।
११६	षट्कमलं	छह कमल निम्न प्रकार हैं:– १-विंदपद्म (ब्रह्माण्ड) २-कंठ–पद्म (कंठ) ३-हृदिपद्म (हृदय) ४-नाभिपद्म (नाभि) ५-गुह्य-पद्म (गुप्तकमल) ६–पदपद्म (चरण कमल)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७	पर्जय	पर्याय या शरीर।
११८	न्यानंविन्यान	ज्ञान विज्ञान (भेद विज्ञान)
११९	अप्पा	आत्मा।
१२०	परमप्पा	परमात्मा।

—(८)—

श्री श्रावकाचार में आये हुए शब्दों का अर्थः

१२१	त्रैलोक्यं भुवन	तीन लोक रूपी महल।
१२२	रूपातीतं	पौद्गलिक रूप रहित।
१२३	विन्दु संजुत्तं	निर्विकल्पता युक्त।
१२४	विश्वलोकं	समस्त लोक।
१२५	विक्त रूपी	प्रगट निजरूपी।
१२६	पंचचेल	पांच प्रकार के वस्त्र १—अंडज (कोशा आदि) २— बुण्डज (कपास आदि) ३— वंकज (वल्कल आदि) ४— रोमज (रोम के कंबल) ५— चर्मज (चमड़े के)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२७	सरवन्यं	सर्वज्ञ ।
१२८	णिग्गोयं	निगोद ।
१२९	कोहाग्नि	क्रोधाग्नि ।
१३०	तिक्तते	त्याग करते हैं।
१३१	सप्तप्रकृति	आत्मा के सम्यक्त्व गुण को घातने वाली निम्न सात प्रकृतियां :— १-मिथ्यात्व २-सम्यक्मिथ्यात्व ३-सम्यक्प्रकृति ४—अनंतानुबंधी क्रोध, ५— अनंतानुबंधी मान ५— अनंतानुबंधी माया ६— अनंतानुबंधी-लोभ ।
१३२	शल्यं	तीन शल्य :— १-माया २-मिथ्या ३-निदान
१३३	अधर्म पाश	यह तीन विशेषण कुगुरू
१३४	अदेवं ताड़की	रूपी पारधी के हैं जो जीवों
१३५	विकहा जाल	को अपने जाल में फंसा कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		नरक निगोदादि में डाल कर दुःख देते हैं।
१३६	अचेतं	अचेतन या जड़।
१३७	आरति	आर्तध्यान, इसके ४ भेद हैं। १–इष्ट वियोगज २– अनिष्ट-संयोगज ३– पीड़ा चिंतवन, ४– निदान।
१३८	रौद्रं	रौद्रध्यान, इसके भी ४ भेदहैं १–हिंसानंदी, २–मृषानन्दी, ३–चौर्यानंदी ४–विषयानंदी
१३९	धर्मं	धर्म ध्यान इसके भी ४ भेद हैं १–आज्ञाविचय २– अपाय-विचय, ३– विपाक विचय ४— संस्थान विचय।
१४०	शुक्लं	शुक्लध्यान, इसके भी ४ भेदहैं १-पृथक्त्व वितर्क २–एकत्व–वितर्क ३–सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		४— व्युपरतक्रियानिवृत्ति । नोट-इनका वर्णन श्री श्रावकाचार जी की टीका में है ।
१४१	विकहा	विकथा, इसके भी ४ भेद हैं– १–स्त्रीकथा, २–भोजनकथा, ३–राजकथा, ४- चोरकथा ।
१४२	विसनं	व्यसन, इसके ७ भेद हैं:— १- जुआ खेलना, २- मांस-भक्षण, ३-मद्य पान, ४-वेश्या सेवन, ५- शिकार खेलना, ६-चोरी करना ७-परस्त्री सेवन
१४३	विदलं	द्विदल, अर्थात् कच्चे दूध दही मही के साथ दो दाल वाली चीजों का खाना; यह अभक्ष्य है ।
१४४	फल सम्पूर्ण	पूरा फल, यह भी अभक्ष्य है कोई भी फल तोड़ फोड़ कर ही खाना योग्य है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४५	अभ्रपटलं	मेघ पटल।
१४६	त्रिअर्थं	तीन अर्थ, १- सम्यग्दर्शन, २- सम्यग्ज्ञान, ३- सम्यक्चारित्र, या १ ॐ, २ ह्रीं, ३ श्रीं।
१४७	पादस्थं आदि	ध्यान के और भी ४ भेद हैं १- पदस्थ ध्यान २- पिण्डस्थ ध्यान, ३- रूपस्थ ध्यान, ४- रूपातीत ध्यान।
१४८	कुन्यानं त्रति	तीन कुज्ञान, १- कुमति ज्ञान, २-कुश्रुतज्ञान ३-कुअवधि ज्ञान
१४९	तत्वं	सात तत्व, १- जीव २-अजीव ३- आस्रव ४- बंध ५- संवर ६- निर्जरा, ७- मोक्ष।
१५०	पादार्थं	९ पदार्थ, अर्थात् उक्त ७ तत्वों में पुण्य, और पाप ये दो को और गिनने से ९ पदार्थ होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५१	दव्वं	द्रव्य छह होते हैं— १- जीव द्रव्य, २-पुद्गल द्रव्य, ३- धर्म द्रव्य ४- अधर्म द्रव्य ५-आका द्रव्य ६-काल द्रव्य नोट- इन्हीं ६ द्रव्यों में से काल को छोड़ कर ५ द्रव्य अस्तिकाय हैं।
१५२	कोशी	कौशिक अर्थात् घूघू या उल्लू दिन में अंधा होता है।
१५३	भास्करं	सूर्य।
१५४	विचक्खणा	विचक्षण या चतुर।
१५५	कषायं	कषाय, इसके २५ भेद निम्न प्रकार जानना :— ४ अनंतानुबंधी, ४ अप्रत्याख्यानावरण, ४ प्रत्याख्यानावरण, ४ संज्वलन, ६ नोकषाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५६	सम्मत्तं	सम्यक्त्व, ३ भेद हैं :— १-उपशम २-वेदक ३-क्षायिक
१५७	षट्कर्म	श्रावक के नित्य करने योग्य ६ कर्म :— १ देव पूजा, २ गुरूपासना, ३ स्वाध्याय, ४ संयम, ५ तप, ६ दान ।
१५८	संयमं	६ काय के जीवों की रक्षा तथा ५ इन्द्रिय, व मन को वश में रखना ।
१५९	तप	इच्छा का निरोध करना, इसके बारह भेद हैं :—

(बहिरंग)
१— अनशन ।
२— ऊनोदर ।
३— व्रतपरिसंख्यान
४— रसपरित्याग
५— विविक्त शयनासन
६— कायक्लेश ।

(अन्तरंग)
७— प्रायश्चित ।
८— विनय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	९- वैयावृत्य	११-- व्युत्सर्ग ।
	१०- स्वाध्याय	१२-- ध्यान ।
१६०	दान	चार प्रकार, १- आहार दान, २- औषधि दान, ३- अभय-दान, ४- ज्ञान दान ।
१६१	प्रतिमा एकादशं	ग्यारह प्रतिमा :— १-दर्शन प्रतिमा २-व्रत प्रतिमा। ३- सामायिक प्रतिमा । ४- प्रोषधोपवास प्रतिमा । ५- सचित्त त्याग प्रतिमा । ६-रात्रिभोजन त्याग प्रतिमा । ७- ब्रह्मचर्य प्रतिमा । ८- आरंभत्याग प्रतिमा । ९- परिग्रहत्याग प्रतिमा । १०- अनुमति त्याग प्रतिमा । ११- उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा ।
१६२	स्वाध्याय	शास्त्राध्ययन करना, इसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		पांच भेद हैं— १- वाचना, २- पूछना , ३- चिन्तवन , ४- कंटस्थ करना , ५- धर्मोपदेश देना ।
१६३	अनुयोगं	अनुयोग चार हैं :— १-प्रथमानुयोग २-चरणानुयोग ३-द्रव्यानुयोग, ४-करणानुयोग
१६४	अणुव्रत	पांच हैं —१ अहिंसाणुव्रत, २ सत्याणुव्रत ३ अचौर्याणुव्रत ४— ब्रह्मचर्याणव्रत , ५— परिग्रह परिमाणाणुव्रत ।
१६५	गुणव्रत	तीन हैं, १ दिग्व्रत २ देशव्रत ३ अनर्थदण्डत्याग ।
१६६	शिक्षाव्रत	चार हैं :— १ सामायिक , २ प्रोषधोपवास ३ भोगोपभोग प्रमाण ४ अतिथिसंविभाग । नोट— उपरोक्त, ५ अणुव्रत,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत, ये १२ श्रावक के व्रत हैं।
१६७	मलपंचवीसं	सम्यग्दर्शन के २५ दोष— ८ मद, ८ शंकादि दोष, ६ अनायतन ३ मूढ़ता।
	आठ मद—	१ ज्ञान-मद, २ पूजा-मद, ३ कुलमद, ४ जातिमद, ५- बलमद, ६- ऋद्धिमद, ७- तपमद, ८- शरीरमद, ये आठ मद के भेद हैं।
	आठ शंकादिदोष—	१- शंका, २- कांक्षा, ३- विचिकित्सा, ४- मूढ़दृष्टि, ५-अनुपगूहन, ६- अस्थितिकरण ७-अवात्सल्य, ८-अप्रभावना,
	छह अनायतन—	१ कुदेव प्रशंसा, २ कुगुरु-प्रशंसा, ३- कुधर्म प्रशंसा, ४- कुदेवोपासक प्रशंसा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५– कुगुरु उपासक प्रशंसा,
६– कुधर्मोपासक प्रशंसा।

तीन मूढ़ता– १–लोकमूढ़ता, २-देवमूढ़ता,
३– पाखण्डि–मूढ़ता।

१६८ सोड़षकारणं जिनसे तीर्थङ्कर प्रकृति का बंध होता है ऐसी १६ भावना- १- दर्शन विशुद्धि, २- विनय सम्पन्नता, ३– अनतिचार शीलव्रत ४ अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग ५ संवेग ६ शक्तितस्त्याग ७ शक्तितस्तप ८ साधुसमाधि ९- वैयावृत्य, १०- अर्हद्भक्ति, ११ आचार्यभक्ति १२ बहुश्रुत-भक्ति, १३– प्रवचन भक्ति, १४– आवश्यकापरिहाणि, १५– मार्ग–प्रभावना, १६– प्रवचन–वत्सलत्व।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६९	कन्दवीयं	कन्दवीज, जमीकंद।
१७०	ऊर्ध	उच्च।
१७१	अर्ध	नीचे, तथा अर्ध (आधा)
१७२	जोयं	देखना।
१७३	जत्र	जहां।
१७४	तत्र	तहां या वहां।
१७५	तिविहं	त्रिविधि, (तीन प्रकार)
१७६	जोगं	योग (मन, वचन, काय)
१७७	तवं	तप।
१७८	अनृतं	असत्य।
१७९	नरयं	नरक सात होते हैं— १- घम्मा, २- वंशा, ३ मेघा, ४- अञ्जना, ५- अरिष्टा, ६- मघवी, ६- माघवी।
१८०	मदष्टं	मद आठ।
१८१	वक्कं	वक्र या कुटिल (टेढ़ा)
१८२	कूड	क्रूर, दुष्ट, दुर्जन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८३	प्रयोजनं	प्रयोजन, मतलब ।
१८४	पंचदिसी	पंच परमेष्ठी, पंचज्योति ।
१८५	सुयं	स्वयं, अपने आप ।
१८६	संजमं	संयम ।
१८७	दुतीय	द्वितीय ।
१८८	णीच, इत्र	नित्य, इतर निगोद ।
१८९	अप	जलकाय ।
१९०	तेज	अग्निकाय ।
१९१	वायं	वायुकाय ।
१९२	विकलत्रयं	दोइंद्रिय, तीनइंद्रिय, चारइंद्रिय
१९३	जोयनि	योनि (जीव के उत्पन्न होने के स्थान) ८४ लाख ।
१९४	भेषजं	औषधि दान ।
१९५	गवं	गाय ।
१९६	त्रणं	घास ।
१९७	स्वर्गामिनो	स्वर्ग जाने वाले ।
१९८	निपातये	गिराना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६६	प्रमोदनं	प्रमोद, आनन्द।
२००	अभ्यागतं	अतिथि, पड़गाहन, सत्कार।
२०१	दात्र	दातार।
२०२	अनस्तमती	अनथेऊ या रात्रि भोजन-त्याग
२०३	वे घड़ियं	दो घड़ी।
२०४	खादं	खाद्य आहार।
२०५	स्वादं	स्वाद्य आहार।
२०६	पीवं	पेय आहार।
२०७	लेपं	लेह्य या लेपाहार।
२०८	वासी भोजन	आजका बना कच्चा भोजन आदि कल खाना सो वासी-भोजन
२०६	विलछंते	विलछानी डालना, जहां का जल हो वहीं।
२१०	फासू	प्रासुक।
२११	देवाले	देवालय मंदिर या चैत्यालय
२१२	उपायदेव	उपाध्याय।
२१३	वय	व्रत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४	पोसा	प्रोपधोपवास ।
२१५	बंभं	ब्रह्मचर्य ।
२१६	नृतं	सत्य ।
२१७	अस्तेयं	अचौर्य ।
२१८	अनेयं	अनेक ।
२१९	कमठी	मछली ।
२२०	डिंभ	अण्डा या बच्चा ।
२२१	मच्छका	मछली ।
२२२	अण्ड	अण्डा ।
२२३	रेतं	बालू, रेत ।
२२४	जल शयनी	मछली ।
२२५	तालकी टऊ	सरोवर का कीड़ा ।
२२६	इति	इस प्रकार ।
२२७	विरंचित	विरचित ।
२२८	सम उत्पन्निता	समाप्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

" श्री ग्रन्थराज न्याय समुच्चयसार " में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

२२९	समुच्चय	समूह या समस्त।
२३०	सार	प्रयोजन भूत।
२३१	रिसहादि	ऋषभादि।
२३२	किंचितु	थोड़ा।
२३३	कहंतेन	कहते हुए।
२३४	प्रबोधनं	सम्बोधन, उपदेश।
२३५	गगनं	आकाश।
२३६	दिनयरकिरनि	सूर्य की किरण।
२३७	कदली	केला।
२३८	पुलिनं	पोला या निःसार।
२३९	प्रतख्यान	प्रत्याख्यान, (त्याग)
२४०	विद्यमानो	वर्तमान में उपस्थित।
२४१	आराहणं	आराधन।
२४२	प्राणमुखं	पराङ्मुख, विरुद्ध।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४३	अवकाशं	स्थान या समय।
२४४	गोयते	गाया जाना, कथन।
२४५	उन्मूलितं	उखाड़ डालना।
२४६	निकन्दनं	नष्ट करना।
२४७	ठिदि	स्थितिबन्ध।
२४८	अणुभागं	अनुभागबन्ध।
२४९	प्रकिर्ति	प्रकृति बन्ध।
२५०	प्रवेशनं	प्रदेशबन्ध।
२५१	मुणेयव्वो	जानना चाहिये।
२५२	ऐरिसो	ऐसा।
२५३	लिस्साऊ	लेश्यायें।
२५४	णिव्वुए	निर्वाण।
२५५	जंति	जाता है।
२५६	संवेऊ	संवेग (संसार दुःखों से भय या धर्म व धर्म–फल से प्रेम)
२५७	णिव्वेऊ	वैराग्य।
२५८	वाच्छिल्लं	वात्सल्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५६	णिद्दन्दो	निर्द्वन्द्व।
२६०	भन्ती	भक्ति।
२६१	चउक्कं	चार।
२६२	सीहं	सिंह (शेर)
२६३	गयंद जूहेन	हाथियों का समूह।
२६४	दुःख वीयंमी	दुःख का बीज।
२६५	गुरुपसात	गुरु प्रसाद (कृपा) से
२६६	खिऊ	क्षय।
२६७	डंडकपाट	डंड, डंडा (अर्गला) कपाट (किवाड़)
२६८	संकप्पवियप्पं	संकल्प, विकल्प।
२६९	पुग्गल	पुद्गल।
२७०	तुरियं	चौथा।
२७१	अलियं	अलीक (झूंठ)
२७२	मंक्कड़	मर्कट (बन्दर)
२७३	चवलं	चंचल।
२७४	खिम	क्षमा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७५	साउच्चं	शौच ।
२७६	आलाप	वाणी ।
२७७	आभिंतर	अन्तरङ्ग ।
२७८	दिगम्बर	दिग् (दिशा ही) अंबर (वस्त्र)
२७९	महावय	महाव्रत ।
२८०	अयं	यह ।
२८१	कीलय	स्थिर ।
२८२	विरदो	विरक्त ।
२८३	मनपसरै	मन का फैलाव ।
२८४	आसन्य भव्व	निकट भव्य ।
२८५	आमोदर्ज	ऊनोदर तप ।
२८६	इत्थु	यहां का ।
२८७	प्राछितं	प्रायश्चित ।
२८८	झाणं	ध्यान ।
२८९	जिणेहि	जिनेन्द्र द्वारा ।
२९०	विरयम्मि	विरक्त होना ।
२९१	सूत्र	संक्षेप या थोड़े शब्दों में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		विशाल अर्थ कथन सो सूत्र।
२६२	अवगाहन	प्रवेश ।
२६३	चवन्तं	बोलना ।
२६४	संवरणं	संवर करना या संकोचना।
२६५	कुच्छिय	कुत्सित या खोटा।
२६६	डहनं	दहन (भस्म) करना।
२६७	रई	रति।
२६८	पाछीतो	पश्चात्।
२६६	अइसय	अतिशय।
३००	पड़िहार	प्रतिहार्य।
३०१	पुहयि	पृथ्वी।
३०२	मिच्छा	पहला, मिथ्यात्व गुणस्थान
३०३	सासण	द्वितीय सासादन गुणस्थान
३०४	मिस्सो	तृतीय मिश्र गुणस्थान।
३०५	अविरइ	चतुर्थ अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान ।
३०६	देसविरदं	५वां, देश विरत गुणस्थान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०७	पमत्तो	छठा प्रमत्तविरत गुणस्थान
३०८	अपमत्तो	सातवां अप्रमत्तविरत गुणस्थान
३०९	अपुव्व	आठवां अपूर्वकरण गुणस्थान
३१०	अणियत्त	नवमां अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
३११	सूक्षम	दशवां सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान
३१२	उवसंतकसाय	ग्यारहवां उपशांतमोह गुणस्थान
३१३	क्षीणमोह	बारहवां क्षीण मोह गुणस्थान
३१४	संयोगि जिनं	तेहरवां संयोगकेवली गुणस्थान
३१५	अजोग	चौदहवां अयोगकेवली गुणस्थान
३१६	टंकोत्कीर्ण	वज्र या पाषाण पर उकेरी गई
३१७	निहारं	मल मूत्रादि।
३१८	ठाणं	स्थान।
३१९	संसार साइरे	संसार सागर।
३२०	सहजोपनीतं	सहज में उत्पन्न हुआ।
३२१	उद्धगमऊ	उर्ध्वगामी।
३२२	सुपयेसो	सुप्रवेश।
३२३	जिनतारणरइयं	श्री जिन तारणद्वारा विरचित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ग्रन्थराज "उपदेश शुद्धसार" जी में आये हुए शब्दों का अर्थ :—

३२४	उवएसं	उपदेश।
३२५	सीसाणं	शिष्यों को।
३२६	मनुवा पंखि	मन रूपी पत्ती।
३२७	चंचूवा	चोंच (मुख)
३२८	मणिरयणं	मणि, रत्न।
३२९	आकरणि	कानों से सुन कर।
३३०	मछ	मत्स्य या मछली।
३३१	इष्टं संजोय	इष्ट संयुक्त।
३३२	उववनं	उपवन (बगीचा)
३३३	सिंचन्ति	सींचता है।
३३४	उन्मूलं	उखाड़ना।
३३५	पण्डिय	पण्डित।
३३६	अस्मूह	समूह।
३३७	सुकीय	अपना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३८	फटिक सहावं	स्फटिक मणि के समान स्वभाव वाला।
३३९	रीणं	ऋण या कर्ज।
३४०	उवंनमापि	ॐ नमः भी।
३४१	वारं	जल।
३४२	जाव	जब तक।
३४३	ताव	तब तक।
३४४	वासंमि	निवास हो।
३४५	वपु	शरीर।
३४६	पखिक	पाक्षिक।
३४७	गारव	गर्व, अभिमान।
३४८	संसारंपषि	संसार का पक्ष।
३४९	चदुगऐपत्तं	चतुर्गति का पात्र।
३५०	अजिनं	मिथ्यादृष्टि जीव।
३५१	कलं	शरीर।
३५२	किलाविषी	नीच (अपवित्र)
३५३	अनिष्टं	अकल्याणकारी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५४	गाहा	गाथा ।
३५५	सामुद्रियं	सामुद्रिक या ज्योतिष।
३५६	सांस निसासं	श्वासोच्छ्वास ।
३५७	चन्दं	चन्द्रमा।
३५८	सूरं	सूर्य ।
३५९	गलं	गलना।
३६०	पूरं	पूर्ण होना (पुद्गल)
३६१	दंसण चौविह	दर्शन के ४ भेद हैं— १-चक्षुदर्शन २-अचक्षुदर्शन ३-अवधिदर्शन ४-केवलदर्शन
३६२	अंगयुवाईं	अंग और उपांग।
३६३	ऊर्धसहावं	उच्च स्वभाव धारी।
३६४	विगतोयं	रहित ।
३६५	दंसणं समगं	सम्यग्दर्शन से भरपूर।
३६६	हेयं	त्याग करने योग्य।
३६७	संजदो	संयत (मुनि)
३६८	सरूव—चरण	स्वरूपाचरण चारित्र।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६९	मन्ततन्तं	मन्त्र तन्त्र।
३७०	तोटक	टोटका आदि।
३७१	टेक	आदत।
३७२	विवरीऊ	विपरीत या विरक्त।
३७३	घायचवक्कु	घाति चतुष्क।
३७४	चौदस	चौदह।
३७५	तिहुवनग्गं	त्रिभुवनाग्र (सिद्धलोक)
३७६	जदि	यदि।
३७७	संन्या	संज्ञा चार प्रकारकी होती हैं १- आहारसंज्ञा ३- भयसंज्ञा २-मैथुनसंज्ञा ४-परिग्रहसंज्ञा
३७८	इच्छायारेन	इच्छाकार से, इच्छा करने से
३७९	परखंतो	परीक्षा करे।
३८०	उतखन्तो	नाश करे।
३८१	बोलन्तो	बोले।
३८२	धरयन्तो	धारण करै।
३८३	पीयूसं	अमृत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८४	लीयन्तो	लीन होवै।
३८५	कलियन्तो	शोभायमान।
३८६	लखयन्तो	देखै।
३८७	साहन्ति	साधन करै।
३८८	पोषयन्ती	पोषण करै।
३८९	अगम्य	जहां तक पहुंच नहीं।
३९०	अट्ठामि पुहमिं	आठवीं पृथ्वी मोक्ष।
३९१	कज्ज	कार्य।
३९२	छीनन्ति	क्षीण करै।
३९३	सदव्व	स्वद्रव्य।
३९४	अद्सहावं	आत्म–स्वभाव।
३९५	उपत्ती	उत्पत्ति।
३९६	कलनं	ध्यान या अनुभव।
३९७	आयरणं	आचरणं।
३९८	छेयं	क्षय, छेदन, अन्त।
३९९	गिएहं	ग्रहण करना।
४००	कम्मवल्ली	कर्मों की बेल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री "त्रिभंगीसार जी" ग्रन्थ के शब्दों का अर्थः-

४०१	त्रिभंगी	तीन २ का समूह।
४०२	दल	समूह।
४०३	त्रिभागं	तीन भाग।
४०४	सय अठोत्तरं	आठ उपर सौ (एकसौ आठ)
४०५	संग	परिग्रह।
४०६	अस्त्रियं	स्त्री।
४०७	निपुंसियं	नपुंसक।
४०८	लावनं	लावण्य।
४०९	वृधन्ते	बढ़ते हैं।
४१०	रसनस्य	जिह्वाइन्द्रिय।
४११	निरोधनं	रोकना।
४१२	खण्डनं	खण्डन करना।
४१३	स्वान्तं	मन में।
४१४	अन्यापायंचविचय – आज्ञा विचय, अपाय विचय आदि।	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१५ अस्तित्वं सद्भाव ।
४१६ एतातुभावना यह भावना ।
४१७ मुक्ति श्रीयं ध्रुवं, अविचल मोक्ष लक्ष्मी ।

—इति श्री मत्परमपूज्य मंडलाचार्य गुरुवर्य तारण-तरणाचार्य विरचित चार आशीर्वाद, तीनबत्तीसी, आचारमत, सारमत के ग्रन्थों का शब्दार्थमय "श्री तारण-शब्द कोष" का प्रथम खंड "क्षुल्लक जयसेन जी महाराज द्वारा संपादित" —

—समाप्त ।

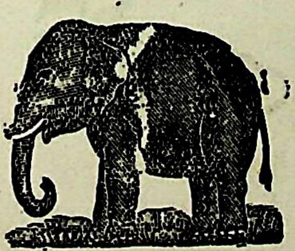

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द-सूची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकारादि के क्रम से नम्बर युक्त, शब्द सूची

(प्रथम खण्ड)

(अ)

नम्बर ।	शब्द ।
८	अर्क ।
२४	अनुवं ।
७३	अचक्षुदर्शन ।
७४	अंकुरणं ।
८२	असुह ।
८६	अन्यानंतन ।
८७	अदेवं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८	अगुरू।
८९	अधर्म ।
९९	अन्या।
१०१	अरजक भाव।
१०२	अन्मोयं ।
११९	अप्पा।
१३३	अधर्म पाश।
१३४	अदेवं ताड़की।
१३६	अचेतं।
१४५	अभ्रपटलं।
१६३	अनुयोगं ।
१६४	अणुव्रत ।
१७१	अर्ध ।
१७८	अनृतं।
१८९	अप।
२००	अभ्यागतं।
२०२	अनस्तमती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१७	अस्तेयं ।
२१८	अनेयं ।
२२२	अंड ।
२४३	अवकाशं ।
२४८	अणुभागं ।
२७१	अलियं ।
२८०	अयं ।
२६२	अवगाहन ।
२६६	अइसय ।
३०५	अविरइ ।
३०८	अपमत्तो ।
३०६	अपुव्व ।
३१०	अणियत्त ।
३१५	अजोग ।
३३६	असमूह ।
३५०	अजिनं ।
३५३	अनिष्टं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६२	अंगयुवाईं ।
३८६	अगम्य ।
३६०	अट्ठामि पुहमिं ।
३६४	अद्दसहावं ।
४०६	अस्त्रियं ।
४१४	अन्यापायंच विचयं ।
४१५	अस्तित्वं ।
५८	ओंकारस्य ।
१३७	आरति ।
२४१	आराहणं ।
२७६	आलाप ।
२७७	आभिंतर ।
२८४	आसन्य भव्व ।
२८५	आमोदर्ज ।
३२६	आकराणि ।
३६७	आयरणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इ)

२२६	इति ।
२८६	इत्थु ।
३३१	इष्टं संजोय ।
३७८	इच्छायारेन ।

(उ)

१	उत्र ।
२	उवन ।
३	उवन्न ।
४	उवस्य रमणं ।
१५	उवन्नं ।
५२	उत्पन्न ।
७२	उवंकारं ।
२१२	उपायदेव ।
२४५	उन्मूलितं ।
३१२	उवसंत कसाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३१ उड्डगमऊ ।

३२४ उवएसं ।

३३२ उववनं ।

३३४ उन्मूलं ।

३४० उवंनमापि ।

३८० उतखन्तो ।

३६५ उपत्ति ।

५६ ऊर्धस्य ।

६० ऊर्ध ।

१७० ऊर्ध ।

३६३ ऊर्धसहावं ।

(ए)

४१६ एतातुभावना ।

२५२ ऐरिसो ।

(क)

३५ कलिनो ।

४० कायोत्सर्गामिनो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१	केवलिनो ।
११०	कलरंजन ।
११५	कलिष्ट ।
१२६	कोहाग्नि ।
१४८	कुन्यानं त्रति ।
१५२	कोशी ।
१५५	कषायं ।
१६६	कन्दवीयं ।
१८२	कूड ।
२१६	कमठी ।
२३२	किंचितु ।
२३३	कहंतेन ।
२३७	कदली ।
२८१	कीलय ।
२६५	कुञ्छिय ।
३५१	कलं ।
३५२	किलाविषी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८५ कलियन्तो ।
३६१ कज्ज ।
३६६ कलनं ।
४०० कम्मवल्ली ।

(ख)

२१ खण्ड ।
३४ खिपति ।
१०७ खिपनं ।
२०४ खादं ।
२६६ खिऊ ।
२७४ खिम ।
४१२ खंडनं ।

(ग)

५५ गमन ।
१०५ गलयति ।
१६५ गुणव्रत ।
१६५ गवं ।
२३५ गगनं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४४ गीयते ।

२६३ गयंदजूहेन ।

२६५ गुरुपसाए ।

३४७ गारव ।

३५४ गाहा ।

३५६ गलं ।

३६६ गिएहं ।

(घ)

२६ घटयं ।

३७३ घायचवक्कु ।

(च)

३० चत्रु ।

४६ च, ।

७८ चेतना ।

१०८ चेयनि ।

२६१ चवक्कं ।

२७३ चवलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६३ चवन्तं।
३२७ चंचूवा ।
३४६ चदुगएपत्तं ।
३५७ चन्दं ।
३७४ चौदस।

(छ)

३८ छन्द ।
५६ छदमस्थ स्वभाव।
३६२ छीनन्ति ।
३६८ छेयं ।

(ज)

१६ जयं ।
२० जुगयं।
३३ जिनं ।
४६ जुगआदि ।
६७ जानन्ते ।
१०३ जिनयति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६	जनरंजन ।
१७२	जोयं ।
१७३	जन्न ।
१७६	जोगं ।
१६३	जोयनि ।
२२४	जलशयनो ।
२५५	जंति ।
२८६	जिणेहि ।
३४२	जाव ।
३७६	जदि ।
३२३	जिन तारण रइयं ।

(झ)

२८८	झाणं ।

(ट)

३१६	टंकोत्कीर्ण ।
३७१	टेक ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ठ)

२४७ ठिदी ।

३१८ ठाणं ।

(ड)

२२० डिंभ ।

२६७ डंडकपाट ।

२६६ डहनं ।

(ण)

१२८ णिग्गोयं ।

१८८ णीच इव ।

२५४ णिव्वुए ।

२५७ णिव्वेऊ ।

२५६ णिद्दन्दो ।

(तं)

२७ तुज्झ ।

६४ तिष्ठन्ति ।

७७ तिअर्थं ।

८४ तिक्तयं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६	त्यक्तं ।
१३०	तिक्तते ।
१४९	तत्वं ।
१५९	तप ।
१७४	तत्र ।
१७५	तच्चिहं ।
१७७	तवं ।
१९०	तेज ।
२२५	ताल की टऊ ।
२७०	तुरियं ।
३४३	ताव ।
३७०	तोटक ।
३७५	तिहुवनग्गं ।

(द)

५	दिप्तं ।
६	दृष्टिमयं ।
३१	दिसरयणी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६	दिप्ते ।
३६	दिढ़ियो ।
४५	दलं ।
५७	दुःखेन विलयंगता ।
६७	दृष्टं ।
१५१	दव्वं ।
१६०	दान ।
१८७	दुतीय ।
२०१	दात्र ।
२११	देवाले ।
२३६	दिनयरकिरनि ।
२६४	दुःखवीयंमी ।
२७८	दिगम्बर ।
३०६	देसविरदं ।
३६१	दंसण चौविह ।
३६५	दंसणं समगं ।
४०२	दलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ध)

१६	धुवं ।
६२	धरेत्वं ।
१३६	धर्मं ।
३८२	धरयन्तो ।

(न)

१३	नंत ।
२५	निमिखं ।
४४	नृत ।
६५	निश्चय ।
६६	नय ।
८०	निकंदन ।
११८	न्यानं विन्यान ।
१७६	नरयं ।
१६८	निपातये ।
२१६	नृतं ।
२४६	निकंदनं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१७ निहारं ।
४०७ निपुंसियं ।
४११ निरोधनं ।

(प)

१० प्रायोजितं ।
२६ पहरं ।
४३ पेष पिषणं ।
४७ प्रकाशिनो ।
५४ प्रवेश ।
७० पण्डितो ।
७१ पूजा ।
८१ प्रचालितं ।
१०४ प्रजाव ।
११२ परमेष्ठी ।
११३ पंचाचार ।
११४ पयड़ि ।
११७ पर्जय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२०	परमप्पा ।
१२६	पंचचेल ।
१२७	पादस्थं आदि ।
१५०	पादार्थं ।
१६१	प्रतिमा एकादशं ।
१८३	प्रयोजनं ।
१८४	पंचदिप्ती ।
१६६	प्रमोदनं ।
२०६	पीवं ।
२१४	पोसा ।
२३४	प्रबोधनं ।
२३८	पुलिनं ।
२३६	प्रतख्यान ।
२४२	प्राणमुखं ।
२४६	प्रकिर्ति ।
२५०	प्रवेशनं ।
२६६	पुग्गल ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८७ प्राछितं ।

२९८ पाछीतो ।

३०० पड़िहार ।

३०१ पुहमि ।

३०७ पमत्तो ।

३३५ परिडय ।

३४६ पखिक्क ।

३६० पूरं ।

३७९ परखंतो ।

३८३ पीयूरुं ।

३८८ पोपयन्ती ।

(फ)

१४४ फल सम्पूणं ।

२१० फासू ।

३३८ फटिक–सहावं ।

(ब)

९५ बहुभेयं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०८	बासी भोजन।
२१५	बंभं ।
३८१	बोलन्तो ।
	(भ)
१५३	भास्करं ।
१६४	भेषजं ।
२६०	भन्ती ।
	(म)
१४	ममलं ।
१८	मुक्ते ।
२८	मूहूर्त ।
१११	मनरंजन ।
१६७	मल पंचवीसं।
१८०	मदष्टं ।
२२१	मद्यका ।
२५१	मुणेयव्वो ।
२७२	मंक्कड़ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७९ महाचय ।
२८३ मनपसरै ।
३०२ मिच्छा ।
३०४ मिस्सो ।
३२६ मनुवापंखि ।
३२८ मणिरयणं ।
३३० मछ ।
३६९ मन्ततन्तं ।
४१७ मुक्ति श्रीयं ध्रुवं ।

(य)

६९ योगी ।

(र)

२३ रयण ।
५३ रंज ।
९४ रूलितं ।
१२२ रूपातीतं ।
१३८ रौद्रं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२३ रेतं ।
२३१ रिसहादि ।
२६७ रई ।
३३६ रोगं ।
४१० रसनस्य ।

(ल)

४२ लोयालोय ।
७६ लोकितं ।
६३ लंकृत ।
२०७ लेपं ।
२५३ लिस्साऊ ।
३८४ लीयन्तो ।
३८६ लखयन्तो ।
४०८ लावनं ।

(व)

६ विन्द ।
३७ वे, दो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३	विंदस्थानेन ।
६८	विधीयते ।
७५	वीर्यं ।
९०	वेदान्त ।
१०६	विलयं ।
१२३	विन्दु संजुत्त ।
१२४	विश्वलोकं ।
१२५	वित्तरूपी ।
१३५	विकहाजाल ।
१४१	विकहा ।
१४२	विसनं ।
१४३	विदलं ।
१५४	विचन्नणा ।
१८१	वक्कं ।
१९१	वायं ।
१९२	विकलत्रयं ।
२०३	वे घड़ियं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०६	विलछंते ।
२१३	वय ।
२२७	विरंचित ।
२४०	विद्यमानो ।
२५८	वाछिल्लं ।
२८२	विरदो ।
२६०	विरयम्मि ।
३४१	वारं ।
३४४	वासंमि ।
३४५	वपु ।
३६४	विगतोयं ।
३७२	विवरीऊ ।
४०६	वृधन्ते ।

(श)

६२	शाश्वंत ।
१३२	शल्यं ।
१४०	शुक्लं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६६ शिक्षाव्रत ।

(ष)

११६ षटकमलं ।

१५७ षटकर्म ।

(स)

११ सहयारं ।

१२ सह ।

१७ सुयदेवं ।

२२ सुधार ।

३२ सुभावं ।

४८ सुयदेवं ।

५१ संघ ।

६१ सद्भाव ।

८५ समयं ।

६१ सार्धं ।

१०० सद्दहनं ।

१२७ सरवन्यं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३१	सप्तप्रकृति ।
१५६	सम्मत्तं ।
१५८	संयमं ।
१६२	स्वाध्याय ।
१६८	सोडष कारणं ।
१८५	सुयं ।
१८६	संजमं ।
१९७	स्वर्गामिनो ।
२०५	स्वादं ।
२२८	सम उत्पन्निता ।
२२९	समुच्चय ।
२३०	सार ।
२५६	संवेऊ ।
२६२	सीहं ।
२६८	संकप्पवियप्पं ।
२७५	साउच्यं ।
२९१	सूत्र ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६४	संवरणं ।
३०३	सामण्ण ।
३११	सूक्ष्म ।
३१४	संयोगिजिनं ।
३१६	संसारसाइरे ।
३२०	सहजोपनीतं ।
३२२	सुपयेसो ।
३२५	सीसाणं ।
३३३	सिंचत्ति ।
३३७	सुकीय ।
३४८	संसारं पवि ।
३५५	सामुद्रियं ।
३५६	सांस निसासं ।
३५८	सूरं ।
३६७	संजदो ।
३६८	सरूवचरण ।
३७७	संन्या ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८७	साहन्ति ।
३९३	सद्ब्र ।
४०४	सयअठोत्तरं ।
४०५	संग ।
४१३	स्वान्तं ।
	(ह)
७	हियारं ।
६८	हृदि ।
३६६	हेयं ।
	(क्ष)
३१३	क्षीणमोह ।
	(त्र)
७९	त्रिभुवनं ।
८३	त्रिविधि कर्म ।
१२१	त्रैलोक्यं भुवन ।
१४६	त्रिअर्थं ।
१९६	त्रणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०१ त्रिभंगी ।

४०३ त्रिभागं ।

(श्री)

५० श्री संघं जयं ।

—इति श्री तारण शब्द कोष

प्रथम भाग—

समाप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकारादि में शब्द संख्या

नं	शब्द संख्या	नं०	शब्द संख्या	नं०	शब्द संख्या	नं०	शब्दसंख्या
१	अ–५७	११	ज–१७	२१	प–१४	३१	ष–२
२	इ–४	१२	झ–१	२२	फ–३	३२	स–५१
३	उ-२१	१३	ट–२	२३	ब–४	३३	ह–३
४	ए–२	१४	ठ–२	२४	भ–३	३४	क्ष–१
५	क–२३	१५	ड–३	२५	म–१८	३५	त्र–७
६	ख–७	१६	ण–५	२६	य–१	३६	श्री–१
७	ग–१२	१७	त–१७	२७	र–१०		कुल शब्द
८	घ–२	१८	द–२०	२८	ल–८		४१७
९	च–११	१९	ध–४	२९	व–३२		
१०	छ–४	२०	न–१४	३०	श–४		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

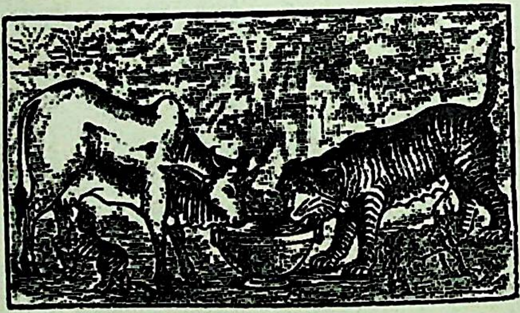

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारगा-शब्द-कोष

(द्वितीय-खण्ड)

—(२)—

[७२]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय खंड के सम्बंध में

* निवेदन *

दो हजार गाथा, श्लोकादिक से कुछ अधिक का यह " श्री ममल पाहुड़ ग्रन्थ " के शब्दों का ही चुनाव इस दूसरे खण्ड में किया गया है। वास्तव में यदि विचार किया जावे तो यह ममल पाहुड़ ग्रन्थ करीब पौने दो सौ ग्रन्थों का संग्रह है। यदि इस ग्रन्थ के एक २ ही फूलना का विस्तृत अर्थ सहित संपादन कर दिया जावे तो बड़े २ ग्रन्थ पृथक २ रूप से तैयार हो सकते हैं।

" ममल पाहुड़ " में शुद्ध चिद्रूप के निज गुणों का ही गान व विलक्षण प्रतिपादन किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया है। साथ ही साथ यह विशेषता है कि प्रत्येक ऋतु सम्बन्धी समय २ की रागरागिनियों में इस ग्रन्थ के फूलना रचे गये हैं। तथा कई फूलना ऐसे भी हैं जो तपोवन में विराजमान गुरुदेव के समक्ष जो भी सांसारिक वस्तु नजर में आई कि उसी पर से आध्यात्मिक तरंग में फूलना रच दिया। श्री गुरु तारण स्वामी जी महाराज प्रत्येक बात को निश्चयनय की मुख्यता से प्रतिपादन करते हैं। अध्यात्म-प्रेम के साथ साथ यदि पूरी रागरागिनियों की जानकारी के साथ इस ग्रन्थ का स्वाध्याय किया जावे तो बड़ा ही आनन्द प्रगट होता है।

इस शब्द कोष में आये हुये कुल शब्द ३१७ हैं जो कि पूरे ग्रन्थ के स्वाध्याय करने में भावार्थ समझने के लिये पर्याप्त हैं। यदि इन दोनों खण्डों के कुल ७३४ शब्दों को समझ लिया जावे तो हम समझते हैं कि कोई भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर १४ ग्रन्थों के समझने में अटक नहीं सकता है ।

प्रत्येक धर्म प्रेमी हमारे परिश्रम को सफल बनाने के लिये इस शब्द कोष का सदुपयोग करेंगे, ऐसी आशा है । तथा संभव है कि किसी शब्द का कोई अर्थ गल्ती लिखा गया हो तो बुद्धिमान सज्जन उसे सुधारने की कृपा करें ।

यदि इस ग्रन्थ का सदुपयोग हुआ तो शीघ्र ही "तीसरे खण्ड" की तैयारी करने की कोशिश की जावेगी ।

—लेखक ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्खो ऽ वैयाकरणः,
मूकस्तर्क—वर्जितः ।
साहित्य--विदुरः पंगुः,
निर्धनः कोषवर्जितः ॥

अर्थात्— व्याकरण से अनभिज्ञ पुरुष शुद्ध भाषा का ज्ञान न होने के कारण मूर्ख होता है। जिसको न्याय विषय का ज्ञान नहीं उसे गूंगा समझना चाहिये क्योंकि उसे तर्क वितर्क करना नहीं आता। अतः वह शास्त्रार्थ नहीं कर सकता। जिसको साहित्यक ज्ञान नहीं वह गूंगे के समान है और जिसके पास 'कोष' नहीं वह निर्धन है।

इस कारण कोष-ज्ञान अवश्य होना चाहिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री परमगुरवे नमः ॥

तारण शब्द-कोष

(द्वितीय खण्ड)

श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ का

—: शब्द-कोष :—

१	भय खिपनिक	संसार के सप्त भयों का नाश करने वाला ।
२	ममल-पाहुड़	जीवों के भवों को निर्मल करने वाला प्रयोजन भूत यह ग्रंथ; पाहुड़ (सार) या अधिकार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३	प्रारभ्यते	प्रारम्भ किया जाता है।
४	देव दिप्ति गाथा	देव के स्वरूप को प्रकाशित करने वाली गाथा।
५	फूलना	जिसके पढ़ने से आत्मा के वास्तविक भाव विकसित हों (या प्रफुल्लित हों) ऐसे भजन
६	नन्द	सम्यग्दृष्टि को प्राप्त होने वाला आत्मिक-सुख।
७	आनन्द	सम्यग्दर्शन सहित एकदेश-चारित्र पालन करते हुये प्राप्त होने वाला आत्मिक सुख।
८	चेयानन्द	सकलचारित्र (मुनि धर्म) को पालन करते हुये, प्राप्त होने वाला आत्मिक सुख।
९	सहजानन्द	क्षपक श्रेणी (कर्मों को क्षय करते गुणस्थान आरोहण) में प्राप्त होने वाला सहजसुख।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०	परमानन्द	अरहन्त, सिद्ध परमात्म-पद में होने वाला परमानन्द।
११	परमतत्तु	शुद्ध जीव तत्व।
१२	मऊ	मय, सहित, मिला हुआ।
१३	पऊ	पद, पदवी, या प्राप्ति।
१४	विन्दपद	निर्विकल्पदशा, या मोक्षपद।
१५	नमियों	नमस्कार करता हूं।
१६	सहाउ	स्वभाव।
१७	उत्तऊ	कहा गया।
१८	ममल सहाऊ	निर्मल स्वभाव।
१६	समय मऊ	आत्मा में मिला हुआ।
२०	निरंजन	कर्म अंजन से रहित।
२१	भाऊ	भाव, भावना।
२२	परमपय	परम पद।
२३	परमानु	प्रमाण।
२४	भव्वु	भव्य जीव।
२५	मुणहु	जानो, मनन करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६	देउ	देव ।
२७	दिट्ठउ	देखा जावे।
२८	उव	ओंकार या शुद्धात्मा।
२६	उवनउदाता	उपदेश दाता (हितोपदेशी)
३०	जोऊ	देखना या योग मन, वचकाय
३१	भेउ	भेद ।
३२	उन्पन्नउ दाता	जिनवाणी उपदेश–दाता।
३३	शब्द वीवान	शब्द रूप विमान।
३४	सुई	वह।
३५	दिपि	प्रकाशित।
३६	अंगदि अंग	प्रत्येक अंग।
३७	हियार	हृदय प्रदेश।
३८	भवियनगन	भविजन वृन्द।
३६	अखयरमन	आत्मा में अविनाशी लवलीन पना।
४०	रयणार	रहने वाले।
४१	मौहो भौरं	संसार–भंवर जाल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२	विनट्ठीयो	विनाश हो।
४३	केरो	सम्बन्धी।
४४	पहुन्तियो	पहुचेंगे या प्राप्त करेंगे।
४५	न्यानी	ज्ञानवान।
४६	मुनियो	मनन करना।
४७	कलि	पाप।
४८	कलियो	पापमय।
४९	रइ	रति, रुचि, राग।
५०	रमियो	रमण करना।
५१	पंचदिति	पंच परमेष्ठी।
५२	उद उदियो	हृदय में पूर्ण उदय हो जाना,
५३	संजोगे	संयोग में।
५४	दिपिदिपियो	दैदीप्यमान प्रकाश।
५५	यहौ	यह।
५६	लहि लहियो	प्राप्त कर लेना।
५७	मयमइयो	तन्मय हो जाना।
५८	अंग सर्वङ्गह	रोम रोम सर्वाङ्ग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६	सुच्छिम	बारीक (सूक्ष्म)
६०	गहि गहियो	ग्रहण करना ।
६१	गगन सहाये	आकाश के समान निर्मल स्वभाव वाला ।
६२	उव उवनौ	आत्म स्वभाव का उदय ।
६३	अन्मोय सुभाये	आनन्द स्वभाव ।
६४	रयण सुभाये	रत्न के समान स्वभाव ।
६५	अर्क विन्द	निर्विकल्प उज्वल प्रकाश ।
६६	सहयार दिप्ति	सहकार ज्योति ।
६७	जिनियऊ	जीत कर ।
६८	ससंक	शंका सहित ।
६९	मुक्तिश्री फूलना	मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त करने की प्रेरणा पूर्वक आत्मा को प्रफुल्लित करने वाला फूलना
७०	न्यान सहाये	ज्ञान स्वभाव द्वारा ।
७१	कल लंकृत	शरीर सहित ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२	दिड्डो दीनो	(कर्मों का) देश निकाला या दिसौटा देना। आत्मा रूपी अपने देशसे कर्मों को निकाल बाहर करना।
७३	चरि चरियो	आचरण करना।
७४	तव यरियो	तपाचार स्वीकार करना।
७५	नंद नदियो	आनन्दित होना।
७६	विधि	कर्म।
७७	मुक्ति पहुत्ते	मुक्ति पहूंचे।
७८	गुरु दिप्ति गाथा	गुरुका स्वरूप प्रकाशित करने वाली गाथा (या फूलना)
७९	उवएसिउ	उपदेश देवै।
८०	गुपतरुई	गुप्तरूप (आत्मा)
८१	गुरु-गरवो	गुरु वह जो भारीपन युक्त या गंभीरता सहित।
८२	अमियरसु	अमृत-रस।
८३	उवन्नी	उत्पन्न हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८४	कंख्य	आकांक्षा (इच्छा)
८५	निवृत्ति	छूटना ।
८६	सिष्ट	साधु स्वभावी ।
८७	दिप्ति कान्ति	दैदीप्यमान प्रभा ।
८८	चत्तु	त्याग करना ।
८९	अमिय मउ	अमृत मयी ।
९०	सिरी	श्री (शोभा) शुभ ।
९१	विलन्तु	विलायमान करो ।
९२	समुत्पन्निता	समाप्त ।
९३	ध्यावहु गाथा	निरन्तर ध्यान में रखने योग्य उपदेश जिस गाथा में हो ।
९४	भव-संसार	जन्म मरण युक्त संसार ।
९५	सुदिट्ठी	सम्यग्दृष्टि ।
९६	भव्यालय	मोक्ष महल ।
९७	समयहं	आत्मा में ।
९८	उपत्ती	उत्पत्ति ।
९९	चष्य	चक्षु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१००	अचष्य	अचक्षु ।
१०१	अवहि	अवधि ।
१०२	घायकम्मु	घाति कर्म ।
१०३	तुरन्तु	शीघ्र ।
१०४	सहयाऊ	सहयार (सहारा-आश्रय)
१०५	गुपितु अर्क	शुद्ध आत्मा का गुप्त प्रकाश
१०६	अर्क-विन्द	निर्विकल्प प्रकाश ।
१०७	लोउ अलोउ	लोक, अलोक ।
१०८	समल भाव	विभाव परिणति ।
१०९	जम्मन	जन्म लेना ।
११०	मरणु	मरण ।
१११	गहनु	ग्रहण किया हुआ ।
११२	अगहनु	जिसे आज तक ग्रहण नहीं किया ।
११३	पयोहर	समुद्र पयोधर ।
११४	सिवपंथु	शिवपंथ-मोक्ष मार्ग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११५	धर्मदिप्त-गाथा	धर्म का स्वरूप प्रकाश करने वाली गाथा।
११६	तंतार फूलना	संसार से पार होने की युक्ति जिस फूलना में समझाई हो वह तन्तार–फूलना।
११७	प्रियो	प्रेममयी।
११८	गरव	गारव–अभिमान।
११९	होल्लास	उल्लास, (आनन्द)
१२०	तं, जं, जह हो	वह, जो, जैसे या जहां हो।
१२१	वीइज्ज	वीज, वीर्य, शक्ति, बल।
१२२	समत्थु	समर्थ।
१२३	विनती फूलना	जिनेन्द्र–स्तवन।
१२४	तुम अन्मोये	तुम्हारे प्रसाद या उपदेश से
१२५	भव्वजियउवने	भव्य जीव जागृत हुये।
१२६	उवने	जागे, सावधान हुये, या अपने कर्तव्य ज्ञान का आत्मा में उदय हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२७	चौगइभमत	चार गतियों में भ्रमण करते।
१२८	पत्त	पात्र।
१२६	जिन उत्तगर्भ चौवीसी फूलना	जिनेन्द्रोक्त गर्भ-—कल्याणक सम्बन्धी चौबीस गाथा का एक फूलना।
१३०	मुक्तिकलियाश्रो	मुक्ति सहित शोभायमान।
१३१	सीय	सिद्ध, शीघ्र, शीतल, शीत।
१३२	षट्‌रमण	षट्‌कमल–ध्यान।
१३३	जंभरियो तं–	जितना ज्ञान आत्मा में प्रवेश हो उतना ही आचरण (चारित्र) हो।
१३४	अवतरियो	अवतार लेना।
१३५	ऊर्ध ध्यान	उत्कृष्ट निज ध्यान।
१३६	स्रोवर	सरोवर।

नोट— इस जिन उत्तगर्भ चौवीसी फूलना में, जम्बूद्वीप के छह कुलाचलों पर जो छह सरोवर हैं और उनमें जो छह कमल हैं तथा उन कमलों पर जो छह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवियां हैं उनका वर्णन है। वे देवीं जिनेन्द्र के गर्भ कल्याणक में आती हैं और माता की सेवा करके अपना जन्म सफल करती हैं।

छह कुलाचल (पर्वत)	छह सरोवर	छह देवियां
१- हिमवान पर्वत।	१- पद्म।	१- श्री।
२- महाहिमवान पर्वत।	२- महापद्म।	२- ह्री।
३- निषध पर्वत।	३- तिगिञ्छ।	३- धृति।
४- नील पर्वत।	४- केशरी।	४- कीर्ति।
५- रुक्मी पर्वत।	५- महापुण्डरीक	५- बुद्धि।
६- शिखरी पर्वत।	६- पुण्डरीक।	६- लक्ष्मी

१३७	पात्र निरूपण फूलना	तीन पात्रोंका कथन जिसमें हो
१३८	जहिन पत्तु	जघन्य पात्र।
१३९	मति समय संजुत्तु	सम्यग्दर्शन संयुक्त।
१४०	सहायार समय	आत्मा का ही सहारा।
१४१	समऊ	समय (शुद्धात्मा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४२	दात्रपात्र विशेष फूलना	दाता व पात्र का विशेष निरूपण जिसमें है।
१४३	चेतकहियरा फूलना	हृदय को सावधान करने का वर्णन जिसमें है।
१४४	वेदक हियरा	अनुभवी हृदय।
१४५	विन्दक हियरा	निर्विकल्प हृदय।
१४६	सुन्यानी	सम्यग्ज्ञानी।
१४७	उत्तुरिना	कहा।
१४८	मैमूरति	स्वयं रूप।
१४९	गारव विटंबना	जनरंजनादि में अभिमान-पूर्वक प्रवृत्ति।
१५०	असमय	पर पदार्थ।
१५१	अन्धकुवय	अन्धकूप।
१५२	उत्पन्न छन्द	जिनवाणी महिमा जिसमें हो
१५३	उत्तऊ	कहा गया।
१५४	जुत्तऊ	युक्त, संयुक्त, सहित।
१५५	रत्तऊ	लवलीन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५६	सत्तऊ	सत्य-युक्त ।
१५७	गयेउ	गया ।
१५८	अवंकऊ	सरल ।
१५६	सिउ समय	थोड़े काल में ।
१६०	दरसन चौबीसी	चार दर्शन कथन चौबीसी
१६१	न्यान लब्धि	ज्ञान की प्राप्ति ।
१६२	विपर्जैय	विपरीत ।
१६३	विवर	छिद्र ।
१६४	कमल विंद छन्द	निर्विकल्प आत्म-कथन ।
१६५	मुनन्तु	मनन करना चाहिये ।
१६६	गिरा	वाणी ।
१६७	सुवनी	सुबुद्धि । और दूसरा अर्थ है— श्राविका ।
१६८	गिराछंद फूलना	इस छन्द में अपनी जिह्वा-इन्द्रिय से किस प्रकार क्या क्या कार्य लेना चाहिये इसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		वर्णन अच्छी तरह किया है [गिरा–वाणी]
१६९	चबंतु	चर्वण करना, चबाना, बोलना ।
१७०	बिंद्रउ फूलना	निजानन्द रसलीन फूलना।
१७१	बिन्द्रस	निर्विकल्प समाधि समुत्पन्न आत्म–सुख ।
१७२	वउज्रुतउ	तप युक्त।
१७३	गरुलहु	अगुरुलघु ।
१७४	भयभिउ	भयभीत ।
१७५	भुल्लि	भूल ।
१७६	भुलिया	भूल गया।
१७७	पर्जयत्रिय	पर्याय का बीज।
१७८	भमन	भ्रमण ।
१७९	जिनयति	जीतता है।
१८०	जिनय	जीत कर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८१	जिन	चतुर्थगुणस्थान वर्ती जीवों को आदि लेकर चौदहवें गुण-स्थान--वर्ती जीवों को 'जिन' कहते हैं।
१८२	जिनंदपउ	जिनेन्द्र पद।
१८३	विन्यान विंद	भेदविज्ञान रूप निर्विकल्पता।
१८४	अनंतभउ	अनन्तभव (जन्म)
१८५	जव तव	जप, तप।
१८६	दर्शन मोहंध	श्रद्धान को भ्रष्ट करने वाले मोहनीय कर्म से अंधे हुये।
१८७	अदिष्ट इष्ट	मिथ्यादर्शन।
१८८	सिउ	शीघ्र।
१८९	निर्मोहयं	निर्मोही।
१९०	कार्न--काज	कारण कार्य।
१९१	चच्चे	चक्षु।
१९२	आचरण	सम्यकचारित्र।
१९३	इत्थं	इस प्रकार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९४	विर्जय	वीर्य (शक्ति)
१९५	उवन	उदय, उपदेश, अनुभव कथन व्याख्यान, सम्यक्त्व साव-धान, जागृत आदि इस 'उवन' शब्द के जैसा प्रकरण हो उसके अनुसार अनेक अर्थ हैं।
१९६	भणेई	कहा है।
१९७	परिनवई	परिणत होता है, (परिणमन)
१९८	मुक्ति गउ	मुक्ति प्राप्त।
१९९	तउ	वह।
२००	जिनयउ	जीते।
२०१	अर्थह भेउ	पदार्थ भेद।
२०२	उवलब्धु	प्राप्त।
२०३	उवनऊ दाता	उपदेश दाता।
२०४	अन्मोयह	अनुमोदना- आल्हाद, भक्ति आनन्द, कृपा, सहारा आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		इस अन्मोयह शब्द के भी प्रकरणानुसार अनेक अर्थ होते हैं।
२०५	संजुत्तु	संयुक्त।
२०६	परमार्थ ज्रकड़ी	मोक्षमार्ग में लगाने वाला फूलना।
२०७	कमल	कमल, आत्मा, कर्म-मल रहित अतिनिर्मल आदि अनेक अर्थ।
२०८	संखिपनं	अच्छी तरह खिपा देना (नष्ट कर देना)
२०९	हितमित परिनै	हित मित परिणति।
२१०	भवियन्नं	भव्यजन।
२११	गयन्द	हाथी।
२१२	कमलविशेषगाथा	आत्मा की विशेषताका कथन करने वाली गाथा।
२१३	संसुद्ध	विशुद्ध।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४	जिनुवयन	जिनवचन ।
२१५	अव्यय	अविनाशी ।
२१६	सिद्ध संपत्तयऊ	सिद्धि सम्पदा ।
२१७	उवनसाह	विजयी आत्मा ।
२१८	इष्ट शब्द	कल्याणकारी वचन ।
२१९	परदिष्टि	परपरिणति ।
२२०	तरुवा	विरवा, वृक्ष ।
२२१	तं अर्क विंद	वह निर्विकल्प प्रकाश ।
२२२	तालु छन्द	जिस छन्द के बोलने में तालु-स्थान से विशेष सम्बन्ध हो ।
२२३	कंठ छन्द	कंठ से विशेषतया सम्बन्धित छन्द ।
२२४	हिययार छन्द	हृदय-ग्राही छन्द ।
२२५	अर्हं ।	परमेष्ठी-ब्रह्म वाचक ।
२२६	अरुहं	अरहन्त ।
२२७	संसर्ग	सम्बन्ध, संयोग ।
२२८	रुचियं	रुचिकर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२९	अरिनं	अरि, (शत्रु)
२३०	नन्दी	आनन्दितात्मा ।
२३१	उपत्ती	उत्पत्ति ।
२३२	अन्मोय, विरोह	राग, द्वेष ।
२३३	विनती	विनययुक्त प्रार्थना ।
२३४	इय	यह ।
२३५	विन्द	वृन्द (समूह)
२३६	रमणपऊ	रमण करने योग्य पद ।
२३७	निकन्दनौ	जड़ से उखाड़ डालना ।
२३८	निरूवियं	निरूपण किया ।
२३९	विहंडनो	त्याग करना ।
२४०	खण्डनौ	खण्डन करना ।
२४१	अनुरत्तऊ	अनुरक्त होना ।
२४२	अवलम्बनौ	सहारा लेना ।
२४३	जिनेन्द्रविन्द	जीवन मुक्त ।
२४४	उवन	'प्रकरणवश इस शब्द का अर्थ यह भी हो सकता है कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		'रत्नत्रयमयी आत्मा ।'
२४५	सद्द वियार	शब्द विचार ।
२४६	तारणतरणसहावं	स्वपर कल्याणकर्ता ।
२४७	भवयनं	भव्यजन ।
२४८	सदिष्ट, अदिष्ट	देखा बिना देखा ।
२४९	अनेय	अनेक ।
२५०	अवलोय	अवलोकन ।
२५१	आलस	आलस्य (प्रमाद)
२५२	विसमय	आश्चर्य (विस्मय)
२५३	इत	यहां ।
२५४	सर्वार्थ सिद्धि	समस्त प्रयोजन की सिद्धि ।
२५५	गुण निहाण	गुण निधान ।
२५६	रिष्ट	मलिन ।
२५७	निहकलंकऊ	निष्कलङ्क ।
२५८	निरिखणं	निरीक्षण ।
२५९	तिथ्ययरं	तीर्थंकर ।
२६०	उत्तनौ	कथन किया ।
२६१	अमिय सरूवे	अमृतमय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६२	अमियन वयन	कोमल वचन।
२६३	गम्ममऊ फूलना	निज गम्य गुण परिचायक।
२६४	देहालै	देह मन्दिर।
२६५	सिद्धालै	शुद्धात्मा का निवास स्थान।
२६६	भेऊ	भेद।
२६७	मुक्ति गवै	मोक्ष जावै।
२६८	समइ	समय (आत्मा)।
२६९	उदहि	उदधि (समुद्र)।
२७०	जोतिरमै	निज प्रकाश में रमण।
२७१	न्यान अन्मोय	ज्ञान सामर्थ्य।
२७२	अवगति	अव्यक्त।
२७३	अगम्म	अशक्य।
२७४	सप्तस्वर गाथा	जिन गाथाओं में षड्ज, ऋषभादि सात स्वरों का वर्णन हो
२७५	बिजौरोदे	बीजारोपण कर।
२७६	पयोधर	मेघ या समुद्र।
२७७	आयरो	आचरण करो या आदरो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

		(स्वीकार करो)
२७८	उछिय	उच्छिष्ट (जूठन)।
२७९	सिरी	श्री (शोभायमान)
२८०	आकिर्ण	कर्णेन्द्रिय (कान)
२८१	निर्वानं	निर्वाण (मोक्ष)।
२८२	हुवयार	स्वीकार या होने वाला।
२८३	सुहगम्यरमण	शुभ धर्म ध्यान का वर्णन करने वाला फू० या सहज-गम्य।
२८४	कमलगिरा	मुखारविन्द की वाणी।
२८५	सचेयणु	सचेतन।
२८६	ललित सहावे	प्रिय स्वभाव।
२८७	विवांन	विमान।
२८८	सेहरो	शेखर, मुकुट, मौलि।
२८९	अवलवली	निर्बल के बलदाता।
२९०	सहसं अट्ठामि	एक हजार आठ।
२९१	दिप्ति कर्णि	दैदीप्यमान कर्णिका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९२	सौ एक अट्ठ	एक सौ आठ।
२९३	समुत्पन्निता	समाप्ता।
२९४	मोहह भवह	सांसारिक भय।
२९५	अहकार	आत्म-खोज।
२९६	समल कम्म	मलिन कर्म।
२९७	असकंध	स्कंध (स्थूल)।
२९८	निरते सूवा	जीव रूपी तोता।
२९९	सियधुव	सिद्धध्रुव।
३००	सहेसा	सहर्ष स्वीकारता।
३०१	बाहुल	विह्वल।
३०२	उमाहो	उमंग युक्त।
३०३	मेवाड़ी छंद	मेवाड़ देशमें चालू राग वाला छंद।
३०४	संसर्ग-सोलही	निश्चय में कुटुम्बी कौन हैं यह निर्णय इस फूलना में किया गया है।
३०५	चितनौटा	मन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०६	स्रोनि	श्रेणि ।
३०७	जिननाह	जिननाथ ।
३०८	सुयं	स्वयं या श्रुतं ।
३०६	पय	पद ।
३१०	पयोग	उपयोग १२ (आठ ज्ञान चार दर्शन ।
३११	पुन्ज	समूह ।
३१२	नयोग	नियोग ।
३१३	सहयार	सहकारी ।
३१४	सुइ	सोई ।
३१५	आनन्द समय	चिदानन्द ।
३१६	पियारो	प्रिय ।
३१७	जिनतारण	सम्यग्दष्टि श्री तारण-तरणाचार्य ।

—इति—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारण शब्द कोष द्वितीय खण्ड—

समाप्त

दीपावली
२४६६

जिनवरचरण चंचरीक—

क्षुल्लक—जयसेन

श्री १०८ श्री निसई जी (मल्हारगढ़)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द-सूची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारण-शब्द-कोष

(द्वितीय-खंड)

—को—

अकारादिवर्णानुक्रमानुसार—

शब्द-सूची

(अ)

शब्द नम्बर	शब्द ।
३६	अंगदि अंग ।
३६	अखयरमन ।
५८	अंग सर्वज्ञह ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३	अन्मोय सुभाये ।
६५	अर्क-विन्द ।
८२	अमियरसु ।
८६	अमियमऊ ।
१००	अचष्य ।
१०१	अत्रहि ।
१०६	अर्क-विन्द ।
११२	अगहनु ।
१३४	अवतरियो ।
१५०	असमय ।
१५१	अन्धकुनय ।
१५८	अवंकऊ ।
१८४	अनन्तु भउ ।
१८७	अदिष्ट इष्ट ।
२०१	अर्थहभेउ ।
२०४	अन्मोयह ।
२१५	अव्यय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२५	अर्हं ।
२२६	अरुह ।
२२६	अरिनं ।
२३२	अन्मोयविरोह ।
२४१	अनुरत्तउ ।
२४२	अवलम्बनौ ।
२४६	अनेय ।
२५०	अवलोय ।
२६१	अमियसरूवे ।
२६२	अमियनवयन ।
२७२	अवगति ।
२७३	अगम्म ।
२८६	अवलवली ।
२६७	असकन्ध ।
७	आनन्द ।
१६२	आचरण ।
२५१	आलस ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७७ आयरो ।

२८० आक्किर्यं ।

२१५ आनन्द समय ।

(इ)

१६३ इत्थं ।

२१८ इष्ट शब्द ।

२३४ इयं ।

२५३ इत ।

(उ)

१७ उत्तऊ ।

२८ उव ।

२६ उवनऊदाता ।

३२ उत्पन्नऊ दाता ।

५२ उद उदियो ।

६२ उव उवनौ ।

७६ उवएसिऊ ।

८३ उवन्नी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९८	उपत्ती।
१२६	उवने ।
१४७	उत्तुरिना।
१५२	उत्पन्न छन्द।
१५३	उत्तऊ ।
१६५	उवन ।
२०२	उवलध्दु ।
२०३	उवनउ दाता।
२१७	उवनसाह।
२३१	उपत्ती ।
२४४	उवन ।
२६०	उवनौ ।
२६६	उदहि।
२७८	उष्टिय।
२६५	उहकार ।
३०२	उमाहो ।
१३५	ऊर्ध ध्यान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(क)

४७ कलि ।

४८ कलियो ।

७१ कललंकृत ।

८४ कंष्य ।

२०७ कमल ।

२१२ कमल विशेष गाथा ।

२२३ कंठ छन्द ।

२८४ कमल गिरा ।

१९० कार्न–कार्ज ।

४३ केरो ।

१६४ कमलविन्द छन्द ।

(ख)

२४० खण्डनौ ।

(ग)

६० गहि गहियो ।

६१ गगन सहावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११८	गरव ।
१५७	गयेऊ ।
१७३	गरुलघु ।
२११	गयन्द ।
२६३	गम्ममउ फूलना ।
१११	गहत्नु ।
१४६	गारव विटम्बना ।
१६६	गिरा ।
१६८	गिरा छन्द ।
७८	गुरु दिप्त गाथा ।
८०	गुपतरुई ।
८१	गुरु गरवो ।
१०५	गुपितु—अर्क ।
२५५	गुण निहारण ।

(घ)

१०२	घायकम्मु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(च)

१६६ चवन्तु ।

१६१ चद्ये ।

८८ चत्तु ।

६६ चद्य ।

३०५ चितनौटा ।

८ चेयानन्द ।

१४३ चेतक हियरा ।

७३ चरिचरियो ।

[ज]

१०६ जम्मन ।

१३३ जं भरियो तं आयरियो ।

१३८ जहिनपत्तु ।

१८५ जव तव ।

६७ जिनयऊ ।

१२६ जिन उत्त गर्भ चौवीसी ।

१७६ जिनयति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८० जिनय ।

१८१ जिन ।

१८२ जिनंदपऊ ।

२०० जिनयऊ ।

२१४ जिनुवयन ।

२४३ जिनेन्द्र ब्रिन्द ।

३०७ जिननाह ।

३१७ जिनतारण ।

१५४ जुत्तऊ ।

३० जोऊ ।

२७० जोतिरमै ।

(त)

७४ तवयरियो ।

११६ तंतार फूलना ।

१२० तं, जं, जह, हो ।

१७२ तउ जुत्तऊ ।

१६६ तउ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२०	तरुवा।
२२१	तं अर्कं विन्द।
२४६	तारणतरण सहावं ।
२५६	तिथ्ययरं ।
१०३	तुरन्त।
१२४	तुम अन्मोये।

(द)

१६०	दरसन चौबीसी।
१८६	दर्शन मोहंध।
३५	दिपि ।
५४	दिपिदिपियो ।
७२	दिट्ठो दीनो।
८७	दिप्तिकान्ति ।
४	देवदिप्ति गाथा।
२७	देउ ।
२६४	देहालै ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ध)

११५ धर्म दिप्त गाथा।
६३ ध्यावहु गाथा।

(न)

६ नन्द।
१५ नमियो।
७५ नन्द नन्दियो।
२३० नन्दी।
३१२ नयोग।
४५ न्यानी।
७० न्यान सहाये।
१६१ न्यान लब्धि।
२७१ न्यान अन्मोय।
२० निरंजन।
८५ निवृत्ति।
१८६ निमोहयं।
२५७ निहकलंकऊ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५८ निरिखणं ।
२८१ निर्वाणं ।
२६८ निरते सुवा ।

(प)

१० परमानन्द ।
११ परपतत्तु ।
१३ पऊ ।
२२ परमपय ।
२३ परमाणु ।
४४ पहुन्तियो ।
५१ पञ्चदिप्ति ।
११३ पयोहर ।
१२८ पत्त ।
१६७ परिनवई ।
२०६ परमार्थ—जकड़ी ।
२१६ परदिष्टि ।
३०६ पय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१० पयोग ।

३ प्रारभ्यते ।

१३७ पात्र निरूपण फूलना ।

११७ प्रियो ।

३१६ पियारो ।

३११ पुञ्ज ।

(फ)

५ फूलना ।

(ब)

३०१ बाहुल ।

१४ बिन्दपद ।

४२ बिनड्डियो ।

७६ विधि ।

६१ बिलन्तु ।

१२१ बीइज्ञु ।

१२३ बिनती फूलना ।

१४५ बिन्दक हियरा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६२	ब्रिपर्जैय ।
१६३	ब्रिवर ।
१७०	ब्रिन्दरउ फूलना ।
१७१	बिन्दरस ।
१८३	ब्रिन्यान ब्रिन्द ।
१६४	बिर्जय ।
२३३	बिनती ।
२३५	ब्रिन्द ।
२३६	बिहएडनौ ।
२७५	ब्रिजौरोदे ।
२८७	बिवान ।
१४४	वेदक हियरा ।

(भ)

१	भयखिपनिक ।
२४	भव्वु ।
३८	भवियनगन ।
६४	भव—संसार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६६	भव्यालय ।
१२५	भव्वजिय उवने ।
१७४	भयभिउ ।
१७८	भमन ।
१६६	भणोई ।
२१०	भवियन्नं ।
२४७	भवयनं ।
२१	भाउ ।
१७५	भुल्लि ।
१७६	भुलिया ।
३१	भेउ ।
४१	भौहो भौरं ।
२६४	भौहह भयह ।

(म)

२	ममल–पाहुड़ ।
१२	मउ ।
१८	ममल सहाउ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७ मयमइयो।
११० मरणु।
१३६ मतिसमय संजुत्तु।
७७ मुक्ति पहुन्ते।
१३० मुक्तिकलियाओ।
१६५ मुनन्तु।
१६८ मुक्तिगऊ।
२६७ मुक्तिगवै।
४६ मुनियो।
६६ मुक्ति श्री फूलना।
१४८ मैमूरति।
३०३ मेवाड़ी छन्द।

(य)

५५ यहौ।

(र)

४० रयणार।
४६ रइ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४ रयण सुभाये।
१५५ रत्तउ ।
२३६ रमण पऊ।
२५६ रिष्ट।

(ल)

५६ लहि लहियो।
२८६ ललितसहावे।
१०७ लोउ-अलोउ।

(व)

२५२ विसमय ।

(स)

६ सहजानन्द ।
१६ सहाउ ।
१६ समय-मऊ।
५३ संजोगे ।
६६ सहयार दिसि।
६८ ससंक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२	समुत्पन्निता ।
६७	समयहं ।
१०४	सहयाऊ ।
१०८	समल–भाव ।
१२२	समत्थु ।
१४०	सहयार समय ।
१४१	समऊ ।
१५६	सत्तऊ ।
२०५	संजुत्तु ।
२०८	संखिपनं ।
२१३	संशुद्ध ।
२२७	संसर्ग ।
२४५	सब्द वियार ।
२४८	संदिष्ट अदिष्ट ।
२६८	समई ।
२७४	सप्तस्वर गाथा ।
२८५	सचेयणु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६०	सहसं अट्ठामि ।
२६३	समुत्पन्निता ।
२६६	समल कम्म ।
३००	सहेसा ।
३०४	संसर्ग सोलही ।
३१३	सहयार ।
८६	सिष्ट ।
६०	सिरी ।
११५	सिवपंथ ।
१५६	सिउ समय ।
१८८	सिउ ।
२१६	सिद्ध संपत्तयऊ ।
२५४	सर्वार्थ सिद्धि ।
२६५	सिद्धालै ।
२७६	सिरी ।
२६८	सियधुव ।
१३१	सीय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४	सुई ।
५६	सुच्चिम ।
६५	सुदिट्ठी ।
१४६	सुन्यानी ।
२८३	सुहगम्यरमण ।
३०८	सुयं ।
३१४	सुइ ।
२८८	सेहरो ।
३०६	स्रेनि ।
१३६	स्रोवर ।
२६२	सौ एक अट्ठ ।

(श)

३३	शब्द बीवान ।

(ष)

१३२	षट् रमण ।

(ह)

३७	हियार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०६	हितमितपरिनै ।
२२४	हिययार छंद ।
२८२	हुवयार ।
११६	होलास ।

—इति—

तारण शब्द-कोष—

समाप्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्त-मंगल

मंगलमय जिनराज हैं,
जिनवाणी, जिनसाधु ।
मंगल तारण तरण जिन—
शुद्ध तत्व आराधु ॥१॥
तारणतरणाचार्य—कृत—
ग्रन्थनि के कछु शब्द ।
अर्थ सहित संग्रह यहां—
शब्द ज्ञान हो लब्ध ॥२॥
भैया श्री रतिचन्द्र जी—
इनको अतिशय प्रेम ।
शब्दकोष में, याहि तें—
लिख्यौ ग्रन्थ यह नेम ॥३॥
ज्ञानार्थी जन लाभ लें—
'तारण-ग्रन्थ' विलोक ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द कोष तें सरलता —
होय, वृद्धि गुण थोक ॥४॥
उन्नी सौ छ्यान्नव यहां—
सम्वत् कार्तिक मास ।
मंगलमय दीपावली—
'इति श्री ग्रन्थ' समाप्त ॥५॥
परम परम आनन्द-मय—
चातुर्मास व्यतीत ।
क्षेत्र निसई मंगल मयी।
निर्जनता की रीत ॥६॥
तीर्थभक्त श्रीमान् शुभ—
कुन्दनलाल तथैव ।
लघु-भ्राता युत आपके—
ग्रन्थ प्रकाशन लैव ॥७॥
उक्त सेठ श्रीमान् के—
मेला में यह ग्रन्थ ।
भेंट रूप वितरण भयो—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्य धन्य शुभ पंथ ॥८॥

मन्त्री जी श्री धर्म रवि—

भूषण कहैं समाज ।

श्री गुलाबचन्द्रादि वर—

सज्जन शैली साज ॥९॥

शब्द, शब्द में कोष के—

निजानन्द प्रगटाय ।

यह वे ही जाने सुधी—

जिन्हें निजातम भाय ॥१०॥

बाल बुद्धि अनुसार यह—

शब्द-कोष लघु ग्रन्थ ।

भूल चूक छमियो सुजन—

परख सु 'तारण पंथ' ॥११॥

बालबुद्धि क्षुल्लक मती—

विनय करै जयसैन ।

शांति शांति शुभ शान्ति दें—

श्री जिनवर के बैन ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हर्ष ! हर्ष !! परम हर्ष !!!

अपूर्व—

तारण साहित्य का प्रकाशन

१ तारण शब्द कोष– यह आपके कर कमलों में है।
२ आचार मत (दोहा पद्यानुवाद)
३ विचारमत (छन्द पद्यानुवाद)
४ तारणतरण – श्रावक स्वरूप।
५ तारणतरण – धर्मोपदेश।
६ तारणतरण आशीर्वाद।
७ तारणतरण द्वादशानुप्रेक्षा।
८ तारण झंडा संगीत (द्वितीया०)
९ अष्टमूलगुण।
१० तारणतरण भजनमाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ तत्व मंगलाचरण का अर्थ—

और

जय अचल बली--जिनेन्द्र स्तवन ।

१२ तारणतरण आरती संग्रह ।

१३ तारणस्तोत्र (संस्कृत)

१४ विश्व शान्ति के पांच उपाय ।

१५ तारण गुण जाप्यमाला ।

१६ तारण साहित्य पर शुभ सम्मतियां ।

१७ तारण तत्व प्रकाश ।

१८ तारण तरण प्रतिष्ठापाठ ।

१९ तारण तरण समाधि मरण पाठ ।

२० तारणतरण – सामायिक पाठ ।

२१ तारण तरण श्रावक प्रतिक्रमण पाठ ।

२२ तारण तरण दर्शन – पाठ ।

२३ तारण तरण नित्य पाठ ।

२४ आहारदान – विधि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ ग्यारह शिक्षा -- (फार्म)।

२६ सामायिक विधि -- (फार्म)।

२७ तारण तरण भाव पूजा।

२८ तारण तरण – जीवन चरित्र।

जैन धर्म भूषण, धर्म दिवाकर ब्र० शीतलप्रसाद जी द्वारा संपादित – तारण साहित्य

१ तीनों बत्तीसी – (पृथक २)

२ तारण तरण श्रावकाचार।

३ ज्ञान समुच्चयसार।

४ उपदेश शुद्धसार।

५ त्रिभंगीसार।

६ चौबीस ठाणा।

७ ममल – पाहुड़ जी (तीन भाग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभीतक—प्रकाशित

तारण साहित्य के प्रकाशक महाशयों

की

शुभ – नामावली

१ श्रीमान् दानवीर सेठ मन्नूलाल जी आगासौद ।

२ श्रीमान् दानवीर सिंघई हीरालाल जी सिंगोड़ी ।

३ श्री तारणतरण चैत्यालय सागर सी० पी० ।

४ समाज सेवक श्रीमान् भाई मथुराप्रसाद जी सागर

५ श्री तारण समाज होशंगाबाद ।

६ श्रीमान् लालदास गुलाबचन्द जी ललितपुर ।

७ श्रीमान् सेठ मुरलीधर जी मेहगूलाल जी सिरोंज ।

८ श्रीमान् सेठ कुन्दनलाल जी हजारीलाल जी मम्मदगढ़ बासौदा ।

९ श्रीमान् भाई पन्नालाल जी राहतगढ़ ।

१० श्रीमान् फूलचन्द गुरुप्रसाद जी टिमरणी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ श्रीमान् भाई हजारीलाल जी विहारीलाल जी
बड़ा बाजार सागर।

१२ सेठ जमनादास जी पन्नालाल जी मिर्जापुर।

१३ सेठ झब्बूलाल जी पन्नालाल जी ऊभेगांव।

१४ सेठ जीतमल जी सिंगोड़ी।

१५ श्रीमान् गणेशसाव जी सिंगोड़ी।

१६ दानभूषण रतीचन्द रामलाल जी बासोदा।

१७ श्रीमान् चुन्नीलाल जवाहरलाल जी बासौदा।

१८ श्रीमान् दयाचन्द नाथूराम जी खुरई।

१९ बड़कुर कालूराम जी बीना।

२० श्रीमान् भाई कालूराम जी पौनार।

२१ नवयुवक मंडल छिंदवाड़ा।

२२ अखिल भारतीय न० यु० मंडल इटारसी।

२३ श्री ताराचन्द जी प्यारेलाल जी मूडरा।

२४ भाई किशोरीलाल जी सागर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजाइये ! सजाइये !!

शिक्षाप्रद-वाक्यों की उत्तमोत्तम

तख्तियों—

से—

अपने २ गृह मन्दिरों को—

सजाइये ।

और—

हमेशह अपनी आंखों के सामने

आदर्श–भावों का नकशा

बनाये रखिये ।

तख्तियां मंगाने का एक–मात्र पता —

बाबू शंकरलाल जैन

प्रोप्रायटर— श्री साहित्य कार्यालय

कुण्डा (छिन्दवाड़ा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीघ्र—

प्रकाशित होगी !

श्रीमान् "कविभूषण" बाबू

अमृतलाल जी 'चञ्चल'

—कृत—

(पद्यानुवादमय)

"तारण-त्रिवेणी"

प्रतीक्षा कीजिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगाइये ! मंगाइये !!

" तारण-बन्धु "

मासिक-पत्र

पूरी तारण समाज तथा संसार के

नवीन-समाचार

उत्तमोत्तम धार्मिक, सामाजिक, लौकिक

लेख, कविता, संवाद-

आदि २ सामग्री का

आनन्द-

घर बैठे जानने के लिये

'तारण-बंधु' मंगाइये

वार्षिक मूल्य २॥)

पताः— तारण-बन्धु कार्यालय

इटारसी (सी० पी०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया—

प्रत्येक छपे हुये—

ग्रन्थ पुस्तक फार्म आदि

धार्मिक साहित्य को—

विनय पूर्वक सम्हाल

कर रखिये ।

भविष्य में काम आवेगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रक— अजितकुमार जैन शास्त्री,
अकलंक प्रेस चूड़ी सराय मुलतान सिटी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi